INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2024

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन की अस्मिता

डॉ. रमा तिवारी
अतिथि विद्वान, हिन्दी विभाग , पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

ममता कालिया हिंदी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका हैं, जिनके उपन्यासों में नारी जीवन की अस्मिता और उसकी जटिलताओं का गहरा चित्रण मिलता है। उनके लेखन में नारी के संघर्ष, उसके आत्मनिर्भर बनने की कोशिश और सामाजिक दवाबों से मुक्ति की चाहत को प्रमुखता से दिखाया गया है। उनके उपन्यास न कवल नारी के जीवन को एक सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उसकी व्यक्तिगत अस्मिता और आत्म–आधारिता की यात्रा को भी विस्तार से उजागर करते हैं। ममता कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन के कई पहलुओं को दर्शाया गया है। वे नारी के आत्मसम्मान, उसके अधिकारो और स्वतंत्रता के सवालों को केंद्र में रखकर अपनी कहानियाँ बुनती हैं। उनके पात्र अक्सर उस समाज में जी रहे होते हैं जहाँ नारी को पारंपरिक रूप से एक सीमित स्थान दिया जाता है। ममता कालिया की लेखनी में नारी अपने अस्तित्व को स्वीकारने, उसकी आवाज को बुलंद करने आर उसे समाज में एक स्वतंत्र पहचान बनाने की जद्दोजहद करती दिखती है।

मुख्य शब्द – ममता कालिया, हिंदी साहित्य, उपन्यास, नारी जीवन एवं अस्मिता।

प्रस्तावना –

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन के भीतर का संघर्ष साफ दिखाई देता है। वे नारी के मानसिक, शारीरिक ओर भावनात्मक संघर्षों को गहरे स्तर पर उजागर करती हैं। उनके पात्र अपनी पहचान बनाने के लिए न केवल सामाजिक संरचनाओं से जूझते हैं, बल्कि अपने परिवार और रिश्तों में भी अपनी अस्मिता की रक्षा करते हैं। उनके उपन्यासों में यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि नारी को समाज में बराबरी और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। वे अपने जीवन के कई पहलुओं में असमर्थता, दबाव और उपेक्षा का सामना करती हैं, फिर भी अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए संघर्ष करती हैं। ममता कालिया का प्रसिद्ध उपन्यास "यही सच है" एक उदाहरण है, जिसमें नारी की मानसिकता, उसके व्यक्तिगत संघर्ष और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदमों को दिखाया गया है। इस उपन्यास में महिला पात्र को अपनी पहचान और स्वतंत्रता की यात्रा पर दिखाया गया है, जहाँ वह अपने संबंधों, समाज और परंपराओं से टकराती है और स्वयं को खोजती है। ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का आत्मनिर्भर बनने की प्रक्रिया को प्रमुखता से दिखाया गया है। वे नारी को एक ऐसी व्यक्तिगत शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो अपनी सीमाओं को पहचानते हुए भी सामाजिक नियमों और कड़ी परिस्थितियों के खिलाफ अपनी आवाज उठाती है। उनकी लेखनी यह दर्शाती है कि एक महिला का जीवन उसकी व्यक्तिगत अस्मिता की खोज के लिए एक निरंतर यात्रा है, जिसमें वह अपनी पहचान को समाज की अपेक्षाओं से परे जाकर समझने की कोशिश करती है।

समकालीन महिला लेखिकाओं ने नारी अस्मिता के प्रति समर्थन भाव अपने कथा–साहित्यों के माध्यम से दर्शाया। ममता कालिया ने अपने समृद्ध उपन्यासों के माध्यम से नारी अस्मिता को विभिन्न संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत किया है। नरक–दर–नरक की उषा प्रतिभाशाली छात्रा होने के साथ–साथ अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक है। किन्तु प्रम विवाह के उपरांत उसका जीवन दिन–प्रतिदिन कष्टदायी होता गया। उपन्यास के संवाद में – ''दरअसल खाना बनाना उषा के लिए संस्कृत पढ़ने से भी मुश्किल काम था। इस कला में न उसकी दिलचस्पी थी न दक्षता। घर पर जब उसकी माँ रसोई में काम करती थी वह कभी–कभी उनके अर्दली की तरह उन्हें बर्तन पकड़ा देती थी, बाजार से सब्जी ला देती। लेकिन पूरी रसोई संभालने का कभी मौका नहीं पड़ा था। पापा की आवाज कान में पड़ी नहीं कि वह रसोई के बाहर।''[1]

उषा अपनी इस कमी के बावजूद हर समय जगन की आवश्यकताओं का ध्यान रख स्वयं को उसके अनुसार ढालने का पूर्ण प्रयास करती। किन्तु स्वादहीन खाने का रोमांस हनीमून के साथ–साथ उतरता गया। उषा की दैनिक दिनचर्या अव्यस्थित एवं थकानदेह थी। इन्हीं संघर्षों के मध्य उषा को माँ बनने की खबर प्राप्त हुई। उषा अपनी अस्मिता के प्रति सजग एवं जीवन में अद्वितीय बनने की चाह रखती है। इसलिए लाखों, करोड़ों औरतों की तरह जब वह भी गर्भवती हुई तो उसे कोई विस्मयानुभूति नहीं हुई केवल असंतोष ही हुआ। मानसिक रूप से बच्चे के प्रति खिन्न उषा सहानुभूति एवं सद्भावना को बोझ समझती है। लेखिका लिखती है – ''उसकी खास दिलचस्पी बच्चा पैदा करने में भी नहीं थी, वह नहीं चाहती थी, यह तमाशा देखू भीड़, ये नर्से, ये पेट पर पड़े टाँके और यह कैद। वह, जो जीवन में विलक्षण और अद्वितीय बनना चाहती थी, एक औरत, बेवकूफ औरत की तरह खाँसती हुई बिस्तर पर पड़ी थी।''[2]

विश्लेषण –

ममता जी के उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता औसत नारियों से विशिष्ट व्यक्तित्व लिए अपनी अस्मिता के प्रति सदैव संघर्षरत है। संदीप प्रतिभा सम्पन्न विवेक के बल पर अपने तूफनी व्यक्तित्व का सिक्का जमाने की ललक में अपनी हार कभी नहीं मानता था। दूसरी महिलाओं को प्रभावित करने के लिए कविता को अपमानित करने से नहीं चूकता। उपन्यास के अनुसार – ''कविता जिस नियम से अपनी दिनचर्या निभा लेती थी, संदीप को उस नियमितता और कुशलता पर एतराज था। उसका ख्याल था, ये कुंद दिमाग लोगों के गुण होते हैं। हर हाल में कविता को अपने से एक सीढ़ी नीचे खड़ा देखना उसे पसंद था, जबकि कविता कदम से कदम मिलाकर चलने में यकीन रखती थी।''[3]

संदीप प्रेम–विवाह करके भी कविता को अपने से आगे बढ़ते नहीं देख सकता था। कविता की तारीफ तक उससे सहन नहीं होती थी। कविता का किसी और से बात करना तक उसे पसंद नहीं था। किन्तु कविता उन नारियों में से नहीं थी जो पति की ज्यादतियाँ चुपचाप सहन कर ले। अपने अहं के प्रति जागरूक कविता संदीप का घर छोड़ने का निर्णय कर लेती है। उपन्यास के संवाद में – ''कविता मूलतः अहंवादी थी। उसके लिए हार से बढ़कर हार का स्वीकार असहनीय था। वह संदीप के आगे भी पराजित नहीं होना चाहती थी, फिर दूसरों के आगे पराजय का खुल्लमखुल्ला स्वीकार तो एकदम अलग बात थी।''[4]

'लड़कियाँ' उपन्यास की लल्ली तथा अफशाँ भी अपनी अस्मिता के प्रति सजग हैं। लल्ली मुंबई जैसे महानगर में अपने सपनों को साकार करने प्रतिभा और पराक्रम के रास्ते संघर्ष करती है। अपने लक्ष्य को पाने में दृढ़ 'विश्वास रखती लल्ली अपनी स्वतंत्रता एवं अस्मिता को अपने जीवन में सबसे महत्वपूर्ण मानती है। लेखिका का कथन है – ''मुझे यह पसंद न था कि दोस्त कभी भी धड़धड़ाते हुए मेरे घर में घुस आएँ, सूना था तो क्या, घर तो घर था। घर की निजता, शुचिता और सुरक्षा को लेकर मेरे विचार बड़े निश्चित थे। किसी भी तरह का शोर, अशांति मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। इसीलिए मैंने शादी तक नहीं की। तबालत तो मुझे किसी की भी मंजूर न थी, अपने सगे भाई बहनों तक की।''[5]

अपने भाई–बहनों की मौत का दुःख समेटे अफशाँ छोटी–सी आयु में अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक है। आत्मनिर्भरता की भावना तथा आर्थिक स्वालम्बन की चेतना ने अफशाँ को पाकिस्तान से मुंबई आने का साहस दिलाया। अपने उत्तरदायित्वों एवं कार्यक्षेत्र में दृढ़ निश्चय ने अफशाँ को शीघ्र ही सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया। लेखिका लिखती हैं – ''अफशाँ की चपलता और भोलापन पेशेवर मॉडलों के लिए चुनौती बनकर आया। शनिवार रात को हामिद ने 'नटराज' में जो पार्टी दी, उसमें यह साफ जाहिर हो गया कि अगर मौका

मिले, बंबई की विज्ञापन दुनिया की लड़कियाँ अफशाँ का मुँह नोचने में कतई देर न करें। उन्होंने पार्टी में जान–बूझकर अफशाँ का बहिष्कार किया और उसकी खिल्ली उड़ाई। लेकिन अफशाँ बहादुर थी। उसने उन पर बिल्कुल जाहिर न होने दिया कि उसे चोट लग रही है।''[6]

ममता जी के उपन्यास 'प्रेम कहानी' की 'जया' तथा 'यशा' भी शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं। जया अपनी शिक्षा के प्रति जागरूक, प्रतिभाशाली छात्राओं में थी। उसे मराठी में डिस्टिंक्शन मिला था तथा योग्यता छात्रवृत्ति भी प्राप्त हुई थी। किन्तु पिताजी के तबादले ने उसे उसके प्रिय विषय को छोड़ने को विवश कर दिया। उपन्यास के संवाद में ''पापा के समझाने का कोई असर नहीं हुआ। सबसे अलग कुछ कर गुजरने की ललक मन में हिलोर मारती थी। मैं जिद पर अड़ी रही। पापा भी, वह मुझे बंबई भेजने को तैयार नहीं थे।''[7]

अपने अस्मिता और स्वतंत्रता की जिद में जया ने दिल्ली में पढ़ने के निर्णय में अपने परिवार की स्वीकृति हासिल कर ली। जया की तरह 'यशा' भी जीवन में कुछ करने की लालसा में दिल्ली पढ़ने जाती है। यशा के घर वाले पुराने दकियानूसी, विचारधारा के हैं। वे केवल अच्छा कर पाने की लालसा में यशा को आई. पी. की पढ़ाई करवाना चाहते हैं। किन्तु यशा शादी के नाम पर बली नहीं चढ़ना चाहती। जीवन से अनेक अपेक्षाएँ रख यशा के मन में आक्रोश व खिन्नता ने उसे जड़ बना दिया। उपन्यास के कथोपकथन में यशा कहती है – ''मेरी दोनों दीदियों के एक–एक कर ब्याह हुए तो पिताजी ने हर बार हाथ झाड़कर कहा – 'यह भी गई' अब बची तीन। यह भी पार लगी, अब बची दो, ... उनके लिए हमें कुएँ में धकेलना या ब्याह में धकेलना एक बराबर है। बस दो पैर, दो हाथ का जीव होना चाहिए, इतना भर देखते हैं वह। बाय गॉड, मैं तो ऐसी शादी नहीं करूँगी।''

''कर देंगे तो क्या करेगी?''
''आत्मदाह, कपड़ों पर तेल छिड़ककर जल मरूँगी, देख लेना।''[8]

ममता जी ने जया तथा यशा जैसी नारी पात्रों को अपने अस्मिता के प्रति जागरूक होकर स्वावलंबी एवं शिक्षित होते दर्शाया है। मानवीय जीवन संघर्ष के मध्य उन्होंने छोटे से फलक पर जया तथा यशा जैसी नारी संघर्षों को उद्घाटित किया है। 'दुक्खम–सुक्खम' में भी लेखिका ने मनीषा तथा प्रतिभा के माध्यम से अपनी अस्मिता की खोज में संघर्षरत नारी जीवन को व्यक्त किया है। प्रतिभा अनेक गुणों से सम्पन्न बचपन से ही अत्यंत प्रतिभाशाली है। नृत्य तथा नाटक में प्रवीण प्रतिभा अपनी पहचान बनाना चाहती है। कड़े अनुशासन में पली प्रतिभा अपने पिता को मनाने का भरपूर प्रयास करती है, कि उसे मॉडल बनने मुंबई जाने दें। किन्तु मम्मी–पापा के मना करने पर वह विद्रोह करके घर से भाग जाती है। यहीं से प्रतिभा के जीवन संघर्ष की शुरुआत होती है। उपन्यास के कथन में – ''घर से निकलने के बाद हर दिन, जीवन की पाठशाला में एक नया अध्याय जोड़ता है, यह तथ्य और सत्य पिछले एक वर्ष में जितना प्रतिभा ने जाना उतना कोई लड़की नहीं जान सकती। यह ठीक है कि उसे सिर छुपाने की जगह के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा।''[9]

प्रतिभा का एकमात्र संकल्प था कि उसे हारे हुए सिपाही की तरह घर नहीं लौटना था। अपनी अस्मिता के लिए प्रतिभा को हर दिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जीविका हेतु वह डांस स्कूल की टीचर बनने के विकल्प को स्वीकार कर अंत में वह एक सफल मॉडल बनती है। प्रतिभा की छोटी बहन मनीषा रूप रंग एवं गुणों में प्रतिभा के मुकाबले औसत थी। किन्तु पढ़ने में योग्य मनीषा अपने गुणों को विकसित कर आत्मशक्ति सम्पन्न बनती है। प्रतिभा के घर से चले जाने के पश्चात उसे और भी संघर्षों का सामना करना पड़ता है। ममता जी लिखती हैं – ''और अब वह मनीषा को ऐसी परिस्थिति में फँसा गयी थी जिससे निकलने की राह आसान नहीं थी। उसके ऊपर अपने आचरण की जिम्मेदारी तो अपनी जगह थी, अपनी बहन के आचरण का निराकरण भी उसे ही करना था। गुड गर्ल का खिताब हासिल करने के लिए उसे दिन–रात घर की कसौटी पर घर्र–घर्र करना था। वे जताते नहीं थे पर मनीषा को अन्दाज था कि उसके कॉलेज जाने और आने के वक्त का हिसाब सिर्फ घड़ी नहीं वरन् घर के लोग भी रख रहे थे।''[10]

उपन्यास की पात्र 'भगवती' जो अत्यंत रूढ़िग्रस्त परिवार में कठोर अनुशासन में पली थी, वह भी अपनी अस्मिता के प्रति सचेत है। उस समय 'नारी शिक्षा' का भी महत्व नहीं था। लड़कियों को केवल गृहकार्य में दक्ष करने की ही मान्यता थी। भगवती स्वयं मेहनत से पढ़ाई करके दसवीं की कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर स्कूल

का कीर्तिमान बढ़ाती है तथा उसे कस्तूरबा विद्यालय में नौकरी भी मिल जाती है। इस खबर से आश्चर्य लाला नत्थीमल पहले तो लड़की की कमाई करने पर विरोध करते हैं किन्तु पत्नी के समझाने पर भगवती को नौकरी करने की आज्ञा दे देते हैं। उपन्यास के कथन में – ''बड़े बेमन से पिता भगवती को काम पर भेजने को राजी हुए। उन्होंने उसे डपटकर समझाया, ''टीचर बन गयी है इसका मतलब यह नहीं कि सड़कों पर फक्का मारती घूमे। घर से स्कूल, स्कूल से घर सूधे से आना–जाना है। सड़क पर कभी किसी से बोलना नहीं और कान खोलकर सुन ले, फैशन करने की कोई जरूरत नहीं।''[11]

चूंकि नारी समाज की केन्द्र बिन्दु है, अतः जहाँ पर मानव चित्रण होता है वहाँ नारी चित्रण का होना स्वाभाविक है। विगत वर्षों में अनेक महिला लेखिकाओं ने नारी अस्मिता की खोज में अपने अनुभव से नारी संवेदनाओं एवं संघर्षों का अत्यंत स्वाभाविक एवं यथार्थ वर्णन किया है। नारी अस्मिता की खोज को महिला लेखन में स्वचेतना की प्रवाहित हो रही अंतर्धारा को उनकी कृतियों में सृजनात्मक रूप में देखा जा सकता है। यहाँ रत्ना चटर्जी का अभिमत है – ''भारतीय समाज में स्त्री–मुक्ति आन्दोलन और नारी–अस्मिता की तलाश की शुरुआत ही परम्परा द्रोह से होती है। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान पहली बार नारियों ने व्यापक रूप में घर की चौखट को पार करने का साहस दिखाया और यह वह रेखा थी जो नारी को बांधने वाली अनेक परम्पराओं की धुरी थी, उसके बाद इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में साहित्य में सुनाई देने लगी और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी के परम्परा द्रोह का जो स्वरूप दिखलाई पड़ता है वह विभिन्न मोड़ों, पड़ावों से गुजरता हुआ अत्यन्त रैडिकल रूप में दिखाई पड़ता है।''[12]

ममता कालिया ने 'बेघर' उपन्यास में 'संजीवनी' के माध्यम से पुरुष प्रधान समाज का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें नारी देह को उसकी कौमार्य के कसौटी पर परखा जाता है। पुरुष की इस मानसिकता के तहत संजीवनी की त्रासदी एवं पीड़ा अत्यंत दयनीय है। वास्तव में संजीवनी एक साहसी नारी है, जा विपिन द्वारा की गयी अमर्यादित घटना को महज एक दुर्घटना मानकर उसे भूल जाना चाहती है। अपनी अस्मिता के लिए उसे समाज में हर स्तर पर परीक्षा देना पड़ता है। परमजीत को पाकर वह अपनी प्रारंभिक तकलीफ को भुलाकर उसे सब कुछ बता देना चाहती है। ममता जी लिखती हैं – ''बस स्टाप पर पहुंचने तक वह सोचती आई थी और परेशान हो गई। वह परमजीत को अपना शक बताना चाहती थी पर उसकी समझ में नहीं आया कि वह यह बात कैसे रखे। फिर वहाँ पहुंचने के बाद परमजीत ने बातचीत का कोई सिलसिला ही नहीं आने दिया। हर क्षण उसने चाहा कि वह सब कुछ बता दे और हर क्षण एक और चुम्बन या स्पर्श ने उसे कमजोर और निःशब्द कर दिया। पिछले प्रेम की संक्षिप्तता और असफलता ने उसे इस बार बहुत समर्पित बना दिया। क्षणांश के लिए भी उसे वह समर्पण अनुचित नहीं लगा। शक के बावजूद वह अपने को लगातार कुँआरी ही मानती आई थी।''[13]

अपनी अस्मिता के प्रति सचेत संजीवनी बलात्कार जैसे घोर संताप व पीड़ा से गुजरकर परमजीत के साथ भविष्य में आगे बढ़ना चाहती है। किन्तु नैतिक मानदंडों पर संजीवनी को खरी न पाकर वो घर से 'बेघर' कर दी जाती है। 'दौड़' उपन्यास की स्टैला तथा रेखा अपनी अस्मिता के लिए अपने जीवन में विभिन्न स्तर पर संघर्ष करते हैं। रेखा अपने समय में घर वालों के विरुद्ध प्रेम–विवाह करती है। सास को खुश करने के लिए वो अत्यंत प्रयत्न करती है। अपनी छोटी–सी नौकरी में गृहस्थी को संभाल दोनों बेटे को उच्च शिक्षा देकर आधुनिक रोजगारयुक्त बाजारवाद तथा व्यवसायिक के लिए सक्षम बनाती है। उपन्यास के कथन में – ''जीवन के पचपनवें साल में रेखा को यह सोचकर बहुत अच्छा लगता कि उसके दोनों बच्चे पढ़ाई में अव्वल रहे और उन्होंने खुद ही अपने कैरियर की दिशा तय कर ली। सघन अभी छोटा था पर वह भी जब अपने कैरियर पर विचार करता, उसे दूसरे शहरों में ही संभावनाएँ नजर आती।''[14]

स्टैला भी रेखा की तरह पवन से प्रेम विवाह करना चाहती है। अत्याधुनिक स्टैला जीवन में बहुत कुछ करना चाहती है। उसे कम्प्यूटर में जैसे महारत ही हासिल थी इसके विरुद्ध वह गृहकाय में जैसे खाना बनाना या अन्य कार्य बिल्कुल ही नहीं जानती थी। स्टैला आत्मविश्वासी आधुनिक जीवन शैली की नारी थी। अपनी दैनिक व्यवस्था के मध्य वह हर पल रेखा को खुश करने का प्रयास कर अंततः उसका दिल जीत ही लेती है।

इस प्रकार ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र अपनी–अपनी अस्मिता के लिए विभिन्न कारणों से संघर्ष करती नजर आती हैं। नारी की विभिन्न संवेदनाओं को विस्तृत एवं व्यापक धरातल पर चित्रित कर ममता कालिया ने वर्तमान शिक्षित नारी की जीवनगत जटिलताओं को परिलक्षित किया है। ममता कालिया ने उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों के द्वारा विभिन्न नारी–जीवन संघर्षों को दर्शाया है। लल्ली तथा अफशाँ

असुरक्षा तथा अकेलेपन से संघर्षशील है। वहीं कविता, विद्यावती पति के वर्चस्व के मध्य अपने अस्मिता के लिए संघर्षरत हैं। संजीवनी की त्रासदी व पीड़ा झंझोड़ देती है वहीं इन्दु भी अपने जीवन से उलझनों को सुलझा नहीं पाती।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ममता कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन की अस्मिता को एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सामाजिक दबावों, परंपराओं और रिश्तों के बावजूद अपने अस्तित्व को मान्यता देती है। उनकी कृतियाँ नारी के संघर्ष, उसकी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की ओर उसकी यात्रा की पड़ताल करती हैं। वे न केवल महिला पात्रों को संघर्ष और अस्मिता के रूप में प्रस्तुत करती हैं, बल्कि उनकी आंतरिक दुनिया और समाज से जूझने की अनगिनत कहानियों को भी उजागर करती हैं। ममता कालिया ने नारी जीवन की प्रायः समस्त समस्याओं पर सृजनात्मक कार्य कर नारी मुक्ति को नयी दिशा प्रदान की है। विशेषतः आधुनिक शिक्षित नारियों की मनोविश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति कर ममता जी ने नारी–जीवन को उच्च स्तर पर पहुंचाने की दिशा में ठोस कदम उठाया। स्वातंत्र्योत्तर कालखण्ड में नारी जागरण, नारी अस्मिता आदि से नारी–जीवन में अपक्षाकृत अधिक परिवर्तन दृष्टिगत होता है। इस परिवर्तन ने नारियों को आत्मनिर्भर, शिक्षित एवं उच्च स्थान पर आसीन तो कराया किन्तु उसके अन्तर्मन की स्थिति दयनीय ही रही। उच्च पदों पर आसीन होने के उपरांत भी नारी किसी न किसी रूप में प्रताड़ना का शिकार बन जाती है। इससे वह बहुत हद तक मुक्त अवश्य हो रही है परन्तु पूर्णतः मुक्त होना अभी भी शेष है। निःसंदेह उनमें परिस्थिति से लड़ने का साहस है, अपने–अपने अधिकारों के प्रति सजगता है पर वास्तव में उस पर किसी न किसी का शासन परिलक्षित हो जाता है। मानसिक धरातल पर वह आज भी शोषित होती रही है। ममता कालिया अपनी रचनाओं के माध्यम से पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण तथा आर्थिक लाभ के लिए विज्ञापन में अंग प्रदर्शन आदि से आधुनिक नारियों को सावधान कर साहित्यिक धर्म का निर्वहन भी करती है। उनका यह प्रयास नारी विषयक दृष्टिकोण को नवीनता के साथ प्रस्तुत करने में सहायक प्रमाणित होता है।

संदर्भ –

[1] ममता कालिया – नरक–दर–नरक, पृष्ठ 65
[2] ममता कालिया – नरक–दर–नरक, पृष्ठ 164
[3] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (एक पत्नी के नोट्स), पृष्ठ 31–32
[4] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (एक पत्नी के नोट्स), पृष्ठ 60
[5] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (लड़कियाँ), पृष्ठ 78
[6] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (लड़कियाँ), पृष्ठ 94
[7] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (प्रेम कहानी), पृष्ठ 113
[8] ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास (प्रेम कहानी), पृष्ठ 117–118
[9] ममता कालिया – दुक्खम–सुक्खम, पृष्ठ 259
[10] ममता कालिया – दुक्खम–सुक्खम, पृष्ठ 258
[11] ममता कालिया – दुक्खम–सुक्खम, पृष्ठ 163
[12] शान्ति कुमार स्याल – भारतीय नारी और पश्चिमीकरण, पृष्ठ 31
[13] ममता कालिया – बेघर, पृष्ठ 99
[14] ममता कालिया – दौड़, पृष्ठ 42